निर्वाण क्षेत्र पूजा

सोरठा

परमपूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निशदीस, मन वच तन पूजा करौं।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाण क्षेत्राणि । अत्र अवतरत अवतरत संवौषट।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाण क्षेत्राणि। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाण क्षेत्राणि । अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्।

गीता छन्द

शुचि छीर दधि सम नीर निरमल, कनक झारी में भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौ।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यों जलं निर्वपामीति स्वाहा।। १ ।।

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौ।
भव ताप को संताप मेटो, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यौं चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।। २ ।।

मोती समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं।
औगुनहरो गुण करो हमको, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यों अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।। ३ ।।

शुभ फूल रास सुवास वासित, खेद सब मन की हरौ।
दुख धाम काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।

पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।। ४ ।।

सफेद चिटकी

नेवज अनेकप्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।
यह भूख दुखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यों नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५ ।।

पीली चिटकी

दीपक प्रकाश उजास उज्जवल, तिमिरसेती नहीं डरौं।
संशय विमोह विभरम तम हर, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्या दीपं निर्वपामीति स्वाहा।। ६ ।।

धूप

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरौं।
सब करम पुंज जलाय दीज्यों, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्या धूपं निर्वपामीति स्वाहा।। ७ ।।

ल

बहु फल मंगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसौं निरवरौं।
निहचै मुकति फलदेहु मोको, जोर करै विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्या फलं निर्वपामीति स्वाहा।। ८ ।।

अर्घ

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु फल, दीप धुपायन धरौं।
''द्यानत'' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्या अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। ९ ।।

जयमाला

दोहा

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं।।

चौपाई १६ मात्रा

नमों ऋषभ कैलाश पहारं, नैमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चम्पापुर बन्दौ, सन्मति पावांपुर अभिनन्दौं।।१।।
वन्दौ अजित अजित पद दाता, वन्दौ सम्भव भव दुःख घाता।
वन्दौं अभिनन्दन गण नायक, वन्दौ सुमति सुमति के दायक।।२।।
वन्दौं पदम मुकति पदमाकर, वन्दौ सुपास आश पासाहर।
वन्दौ चन्द्रप्रभु प्रभुचन्दा, वन्दौं सुविधि सुविधि निधि कन्दा।।३।।
वन्दौं शीतल अघ तप शीतल, वन्दौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल।
वन्दौं विमल विमल उपयोगी, वन्दौं अनंत अनंत सुख भोगी।।४।।
वन्दौं धर्म धर्म-विस्तारा, वन्दौ शान्ति शान्ति मन धारा।
वन्दौं कुंथु कुंथु रखवाल, वन्दौं अर अरि हर गुणमालं।।५।।
वन्दौ मल्लि काम मल चूरन, वन्दौ मुनिसुव्रत व्रत पूरन।
वन्दौ नमि जिननमित सुरासुर, वन्दौ पार्श्व पार्श्व भ्रम जग हर।।६।।
बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखरसम्मेद महागिरि भूपर।
एक बार वन्दै जो कोई, ताहि नरक पशु गति नहीं होई।।७।
नरपतिनृप सुर शक्र कहावे, तिहुं जग भोगि भोगि शिव पावे
विघ्न विनाशन मंगलकारी, गुण विलास वंदौ भवतारी।।८।

घत्ता

जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करै।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरि के गुण को बुध उचरै।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।